''वमिन कुल्लि शैइन ख़लक़ना ज़ौजैनी लअल्लकुम तज़क्करून''
(अज़्ज़ारियात आयत–49)

काएनात में 'शादी' करने का दस्तूर

हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

पेड़–पौधों में 'शादी' का सिस्टम

पेड़–पौधों की ज़िन्दगी में जोड़े बनने और नस्ल बढ़ने और 'शादी' का निज़ाम कुछ ऐसा होता है कि जो हर देखने वाले को हैरत में डाल देता है यहाँ तक कि इस अहम मसले के हर पहलू की वज़ाहत और तफसीर की भी इजाज़त नहीं देता है। इस हैरत भरी हक़ीक़त को जो अपने साथ ताज्जुब वाले क़ानून, ग़ैरमामूली और बारीक तरीक़े और मख़सूस हालतें लिये हुए है, चन्द जुम्लों में आप के लिये पेश करते हैं।

अगर आपने फूलों के बारे में ग़ौर किया होगा तो देखा होगा कि उनके दरमियान में एक बारीक क़िस्म का फूल का ज़ीरा होता है और फूलों में उसकी मिक़दार मुख़तलिफ होती है मगर निज़ाम मख़सूस होता है उन फूल के ज़ीरों पर छोटा सा उभार होता है जिसका रंग पीला होता है इसको 'बिसाक' कहते हैं और बिसाक के दरमियान एक छोटी सी थैली होती है जिसमें चार ख़ाने होते हैं। इसमें कुछ दाने होते हैं, यह दाने बहुत ही बारीक होते हैं जो कि जानवरों के नुत्फे की तरह होते हैं।

जब इनमें पेवन्दकारी या गाभ का काम पूरा हो जाता है तो मादा फूल का बीज बन जाता है। यह दाने छोटे होने के बावजूद अपनी जगह मख़सूस वजूद रखते हैं यानी भूल–भुलैइंय्या क़िस्म की इमारत होती है जिसकी नज़ाकत बड़ी ही ताज्जुब वाली होती है और उनमें प्रोटोप्लास्म का माद्दा होता है। इसी तरह चर्बी, शकर एक क़िस्म का सत अज़ई होती है और उनके बीच में दो बीज होते हैं एक छोटा और दूसरा बड़ा। बडे बीज रोइन्दा, उगने वाला और छोटे को राईन्दा, पैदा करने वाला कहा जाता है। इन दोनों का क्या काम है यह आगे बयान होगा।

माद्दा वही हिस्सा है जो फूल के ऊपर होता है और इस उठे हुए हिस्से के ऊपरी हिस्से में होता है और इसकी सतह को लसदार माद्दा छुपाए रहता है। यही लसदार माद्दा नर के दानों को खींचता और महफ़ूज़ करता है और उन्हें उगाने में मदद करता है।

माद्दे के नीचे जो कि फूल के नीचे के हिस्से से मिला होता है एक उभरा हुआ हिस्सा होता है जिसको बीजदानी कहा जाता है। इसमें छोटे–छोटे बीज होते हैं जिनका का एक हिस्सा बीजदानी की दीवार से मिला होता है जिसके ज़रिये वह पानी और ख़ास ग़िज़ा लेता है। छोटे बीजों का भी अपना मख़सूस व क़ाबिले तारीफ वजूद होता है।

ज़िफ़ाफ का अमल

जब बिसाक की गर्द की थैली फट जाती है और यह गर्द जैसे ही कलालड माद्दे पर पड़ती है वेसे ही बढ़ोत्तरी शुरु हो जाती है। यहाँ इस बात का ज़िक्र कर देना ज़रूरी है कि कलाल–ए–माद्दा

तक इस गर्द के पहुँचने के मुख़तलिफ रास्ते हैं कि काएनात का गहरा मुताला (अध्यन्न / Study) करने वाले उन्हें देख कर हैरत में रह जाते हैं।

इन ही मुख़तलिफ ज़रियों में कीड़े–मकोड़े भी हैं जो समझ में न आने वाले तरीक़े पर इस ज़िन्दगी के फ़रीज़े को अन्जाम देते हैं यानी फूलों की मख़सूस रंग, बू और उनकी मिठास के सबब यह कीड़–मकोड़े उन पर जाकर बैठते हैं और यह अपने पैरों से इस गर्द को यहाँ से वहाँ पहुँचा देते हैं। यह काम ख़ास तौर से उन फूलों में जिनके नर व मादा अलग–अलग है और दो पायों पर टिका हुआ है, बहुत ही अहमियत रखता है।

हम कह चुके हैं कि जब गर्द के ज़र्रे कलाला पर पड़ जाते हैं और अक़ल और बढ़ोत्तरी का सिलसिला शुरु हो जाता है तो बड़ा बीज जिसका ज़िक्र हो चुका है, भी इसके साथ बढ़ने लगता है और बीजदानी की तरफ झुकने लगता है और उसके क़रीब पहुँच कर ख़त्म हो जाता है, लेकिन छोटा बीज जो जनने वाला होता है वह इस बारीक नली से गुज़र कर बीजदानी में दाख़िल होता है और फिर उस छुपी और अन्धेरी जगह पर मिलने और जुड़ने का काम अन्जाम पाता है और फूल का नुत्फा पड़ता है और असली बीज वजूद में आता है।

आबो हवा (मौसम) और इन्सान के ज़रिये भी पेड़–पौधों के मेल और जोड़े बनने का काम अन्जाम पाता है। पेड़–पौधों की जिन्दगी की सतह जोड़े बनने के क़ानून की वही कैफियत है जो बेजान मिट्टी पत्थर के अन्दर है। खुदा के इरादे के तहत मेल और पैदाईश का काम बग़ैर किसी इख़्तेलाफ और झगड़े व 'तलाक़' के अन्जाम पाता है और इस तरह वह ज़िन्दा चीज़ों ख़ासकर इन्सान के लिये फल और अनाज व मेवे पैदा करता है।

जानवरों में 'शादी' और पैदाइश का निज़ाम

ज़िन्दगी का मज़ा लेने, नसल के बाक़ी रहने और उसकी ज़ियादती से मुहब्बत का जो हैरत भरा ताल्लुक़ जानवरों के नर व मादा के बीच देखने में आता है उसे बयान नहीं किया जा सकता। इस जानवरों की जान के इस मसले की तवज्जो और उनके दरमियान 'शादी' और मिलीजुली ज़िन्दगी का जो क़ानून और तरीक़ा है उससे हर ग़ौर करने वाला हैरत में पड़ जाता है।

घोंसला बनाने, राज़ छुपाने और जगह व वक़्त के चुनने और सबसे अहम एक साथ खाने के अमल, बच्चों की ज़रूरतें पूरी करने, उनके लालन–पालन और उन्हें ख़तरों और हादसों से बचाने के सिलसिले में नर व मादा एक दूसरे की जो मदद करते हैं वह उनकी ज़िन्दगी से जुड़ा हुआ है। हक़ीक़त में यह खुदा के इरादों की तजल्ली (ज्योति) है उसे हस्ती के अजाएब में शुमार करना चाहिये। अण्डा देने और दूध पिलाने वाले जानवरों का जो तरीक़ा जोड़े बनाने और अण्डों, और बच्चों की हिफाज़त का जो दस्तूर है उससे इन्सान दाँतों तले उंगली दबाए हुए है।

'शादी' और नस्ल बढ़ाने और औलाद फैलाने के जो क़ानून है, वह खुदाई है।

"मा मिन दाब्बति इल्ला हुवा आख़िज़ुन बिनासियतिहा इन्ना रब्बी अला सिरातिम मुस्तक़ीम"

(ज़मीन पर रेंगने वालों में से हर एक की पेशानी उसी के क़ब्ज़े में है। मेरे परवरदिगार का रास्ता बिलकुल सीधा है।)

□□□